आपकी ख़िदमत में "साइंस की दुनिया"

"साइंस की दुनिया" के संपादक डा. रविन्द्र कुमार के साथ एक मुलाक़ात

बातचीत

डा. रवीन्द्र कुमार, राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान (सी.एस.आई. आर.), नई दिल्ली से उर्दू में प्रकाशित होने वाली त्रेमासिक विज्ञान पत्रिका "साइंस की दुनिया" के संपादक हैं। इससे पूर्व इन्होंने इन्स्डाक में भी काम किया है। कई पुस्तकें लिखने के साथ इनके शोध पत्र कई राष्ट्रीय–अंतराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। यहां प्रस्तुत हैं उनसे बातचीत के कुछ अंश।

प्र0 आपकी शिक्षा कहां से हुई?

उ0 मैं अलीगढ़ और उर्दू के माहौल में बढ़ा–पला। मैंने हाई स्कूल मिन्टो सर्किल, अलीगढ़ से किया जहां उर्दू आवश्यक विषय के रूप में थी। अलीगढ़ में मेरे एक मित्र जो आजकल एकेडमिक स्टाफ़ कॉलेज, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में निदेशक हैं, ने मेरा उर्दू में सदैव मार्गदर्शन किया। मैंने ए.एम.यू. से ही एम.एस.सी. तक आगे की पढ़ाई भी जारी रखी। एक बात बता दूं कि मैं बी.एस.सी. में एड्वांस उर्दू लेने वाला मैं एक अकेला ऐसा विद्यार्थी था जो नॉन–मुस्लिम था।

प्र0 "साइंस की दुनियां" के सफर के बारे में बताइए?

उ0 "साइंस की दुनियां" के सबसे पहले संपादक जनाब गुलज़ार देहलवी थे, जिनसे काम सीखते हुए उनके बाद जनाब मोहम्मद ख़लील ने संपादक का कार्यभार ग्रहण किया। ख़लील साहब के बाद इस पद पर मेरा चयन किया गया।

प्र0 "साइंस की दुनियां" में आपका चयन किस आधार पर हुआ?

उ0 निस्केयर ने कम्प्यूटर विषयक सात किताबें निकाली थीं। ये किताबें मुल्क की विभिन्न ज़बानों में अनुवाद कर प्रकाशित होना थीं। जब उर्दू अनुवाद के लिए कोई संतोषजनक व्यक्ति नहीं मिला तो इनके संपादन का कार्य मुझे दिया गया। मेरे कार्य की सराहना हुई और नेशनल काउंसिल प्रोमोशन फॉर उर्दू लैंग्वजेज़ (क़ौमी कौंसिल) से चवासिल हज़ार किताबों का ऑर्डर मिला जिससे निस्केयर को चौदह लाख रूपये का फ़ायदा हुआ। उस समय निस्केयर के निदेशक डा. वी. के. गुप्ता थे, जिन्होंने मेरे कार्य से खुश होकर मुझे "साइंस की दुनियां" का संपादक नियुक्ति किया।

प्र0 आपकी आल ही में प्रकाशित कृति कौन सी है?

उ0 माहौलियात आलूदगी का मसला, जो आल इंडिया यूनानी मेडिकल कॉलेज और एनसीपीयूसी के दूसरे मरकज़ों तक ही नहीं बल्कि पाकिस्तान तक पहुंची। इसका दूसरा भाग मुद्रित होने वाला है।

प्र0 "साइंस की दुनियां" का उद्देश्य क्या है?

उ0 जैसा कि आप जानते हैं कि अंग्रेज़ी और हिन्दी के साथ अनेक देशों में उर्दू सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। हमारे देश में भी उर्दू बोलने और पढ़ने वालों की कमी नहीं है। अतः उर्दूभाषी लोगों के बीच भी विज्ञान का लोकप्रियकरण बहुत ज़रूरी है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए 20 जून, 1975 को महामहिम राष्ट्रपति जी द्वारा इस पत्रिका का विमोचन किया गया था। आज इस "साइंस की दुनियां" का प्रसार पूरे देश में है। हमारे देश का उर्दू में छपने वाला यह पहला रिसाला है जो आम लोगों तक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की नवीनतम

जानकारी उर्दू भाषा में पहुंचाता है। यदि किसी व्यक्ति को उर्दू भाषा भाषा का थोड़ा सा भी ज्ञान है तो वह इसे आसानी से पढ़ सकता है और अपनी उर्दू और अच्छी कर सकता है।

प्र0 आगे आपकी क्यो कोशिश रहेगी?

उ0 मेरी कोशिश रहेगी कि उर्दू पढ़ने वालों को पत्रिका "साइंस की दुनियां" और पुस्तकों के माध्यम से विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की समसामयिक जानकारी मिलती रहे और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का लोकप्रियकरण होता रहे। विज्ञान लोकप्रियकरण से लोगों में वैज्ञानिक जागरूकता का विकास होगा और शिक्षित व जागरूक नागरिक ही देश का विकास कर सकते हैं।

❐ इरफ़ान ह्यूमन